भजन

तर्ज.....मेरे मितवा मेरे मीत रे

मेरे वल्लभा –शब्दातीत रे, ओ मेरे वल्लभा

तेरी सिफत ना शब्दों से हो सके,बिना मेहर के

ओ मेरे वल्लभा.....

(1) हादी ने बताई बेशुमार है शोभा, पिया तेरी शोभा

किसी ने ना कही कोई कह ना सकेगा ,कह ना सकेगा

जिसको नवाज़े मेहर से अपनी, हुकम से वो ही कहेगा

तेरी सिफत ना....

(2) कह–कह मुख से इतना ही निकले, इतना ही निकले

नूरे –जमाल की जमाली ना छोड़े, जमाली ना छोड़े

नूरी शोभा में जो डुबकी लगाए, तो निकल ना कोई सकेगा

तेरी सिफत .....

(3) फेर–फेर देखें जो मुख पिया तेरा, मुख पिया तेरा

कभी ना भरे दिल आत्म का मेरा, आत्म का मेरा

देख–देख देखूँ जो मुखड़े को तेरे तो, सागर इश्क दिखेगा

तेरी सिफत –...

(4) इक–दिली. निसबत के आनन्द है मिलते, आनन्द है मिलते

कहते हुए ये दिल मेरा लरजे, दिल मेरा लरजे

ऐसी हालत हो जाए रुह की मुख से, ना कुछ निकलेगा

मेरे वल्लभा...